Diamond
Comics
D-1816-Rs.15.00

फौलादी सिंह
और तबाही का दूत

डायमण्ड कॉमिक्स

कार्टूनिस्ट

प्राण

के कॉमिक्स पढ़ना न भूलें

Buy from the nearest bookstall, newspaper agent, railway station bookstall or contact us

DIAMOND COMICS (P) LTD,

A-22, Sector-63, Noida. Tel. : 0120-4238008/9, E-mail: diamondcomicsindia@gmail.com Website : www.diamondcomic.com

फैंटम सिंह और तबाही के दूत

लेखक : सुदीप्तो राय • चित्र : मंजुल भरुचा • रंग : राजू राज

मीलों तक फैले एक विशाल रेगिस्तान में, सोवियत एवं भारतीय वैज्ञानिक एक संयुक्त अभियान में व्यस्त थे। रेगिस्तान के इस भाग में कई बार रूसी परीक्षण किये जा चुके थे और अब वैज्ञानिक उस स्थान की गहराई से खुदाई करवाकर ये जाँचने का प्रयास कर रहे थे कि, रूसी परीक्षणों का उस खाली की मिट्टी पर कैसा प्रभाव पड़ा था।

मि. नोवस्की, मैं समझता हूं काफी गहराई तक जमीन खोदी जा चुकी, अब किसी मजदूर को मिट्टी लाने गड्ढे में उतारना चाहिए।

अभी नहीं हम ये काम सुबह करेंगे, मि. सुशान्त।

अभी क्यों नहीं?

यदि हमने इसी समय किसी मजदूर को नीचे उतारा तो मास्क पहने रहने के बावजूद भी उनके दम घुट जाने का पूरा-पूरा खतरा है।

लेकिन दूसरे दिन, ठीक उस वक्त... जब वैज्ञानिक एक मजदूर को नीचे गड्ढे में उतारने की तैयारी कर रहे थे-तभी...

अरे.. ये क्या..?

हंय...

तत्काल सभी का ध्यान उन बड़े-बड़े नीले रंग के बैलूनों (गुब्बारों) पर केन्द्रित हो गया, जो धीरे-धीरे गड्ढे से निकल रहे थे।

हे भगवान... इतने बड़े-बड़े बैलून?

नीले रंग के गुब्बारों का वह समूह गड्ढे से निकला और देखते ही देखते ऊपर, सूर्य की ओर उठता चला गया। लेकिन कुछ ही देर बाद...
अरे यह देखो ? बैलूनों का दूसरा ग्रुप...?
ये बैलून, आखिर हैं क्या चक्कर ?
मैं एक बैलून को पकड़ने का यत्न करता हूं।
नहीं मि. सेनगुप्ता... इन्हें छूना नहीं... ये घातक भी हो सकते हैं।
एक लड़का रो न रहा था। उसने खुदाई के लिये हाथ में उठाया सब्बल (लोहे का वह औजार जिससे जमीन की खुदाई होती है) जमकर उठाते एक बैलून पर दे मारा। तत्काल ही...
धड़ाम
उफफ
...नीला गुब्बारा किसी बम के विस्फोट की भांति भयंकर आवाज करता हुआ फट
गुब्बारे से लाल रंग के चमकते बीज से निकले और गड्ढे में गिरते चले गये।
आश्चर्य... फटे हुए नीले रंग के बैलून से सुनहरे रंग के बीज झड़ रहे हैं।
बात सचमुच ही आश्चर्य की है। अब इस गड्ढे की मिट्टी के साथ-साथ इन बीजों का भी परीक्षण करना आवश्यक हो गया है।
चिन्ता की बात नहीं, मैं नीचे जाऊंगा तो मिट्टी के साथ-साथ कुछ ये बीज भी चुन लाऊंगा।

चेहरे पर मास्क चढ़ाये, गड्ढे में नीचे उतरते उस व्यक्ति ने नीचे झांका- और अगले ही पल-

नऽऽऽ हीं... ये असम्भव है...

क्या हुआ ? क्या असम्भव है ?

खुद ही देख लीजिए साहब... गड्ढे में तो किसी विचित्र जीव की रचना हो रही है...

वहाँ मौजूद सभी व्यक्ति गड्ढे के इर्द- गिर्द जमा हो गये और नीचे झुककर गहराई में झाँकने लगे।

ओह...नो!

एक वैज्ञानिक के पैरों तले से कुछ मिट्टी खिसक कर नीचे गिरी...और उसके साथ ही—

धाँऽऽऽऽऽ

विकराल आकृति का एक विशाल जीव गड्ढे से बाहर निकल आया- जिसे देखते ही सभी भय से सन्न हो गये और घबरा कर अपने-अपने टैंटों की ओर भाग छूटे

बाप... रे भा...गो!

उफ्फ... ये तो कोई दैत्य है।

धाँऽऽऽऽऽ

उस विचित्र जीव के हवा में उठते ही उसके पीछे-पीछे उसी जैसे दर्जनों और भी जीव निकल आये, और बड़े जोरों के साथ हवा में पंखों को फटकने लगे। समूचे क्षेत्र में तेज अंधड़ जैसा दृश्य व्याप्त हो गया... कान फोड़ तेज सीटियों के बीच विचित्र जीवों के फड़फड़ाते बड़े-बड़े पंखों से उड़ती धूल की लपटें उड़ने लगीं।

फsssssss

सींsssssssss

तौबा... ये बिन बुलाई मुसीबत कहां से आ गई?

जल्दी अन्दर आ जाओ सुशान्त!

लेकिन तेज कोलाहल में बाहर खड़े सुशान्त को नौवस्की की आवाज सुनाई न दी। कुछ ही क्षण बाद-

बचाओ

बचाओ

अरे... ये तो सुशान्त की आवाज है।

लगता है, फंस गया?

अ चा ओ

हमें उसकी मदद करनी चाहिए।

तीनों वैज्ञानिक, दिशान्तर लिये फटी से बाहर निकले और सुशान्त को पंजों में उठा कर ले जाते हुए उस दरिन्दे पर उन्होंने गोलियों की बौछार छोड़ी।

सम्मोहन के कहरी सुशान्त को गोली न लग जाये?

मेरा निशाना स्टीक है मि. नौवस्की... लेकिन आश्चर्य है... इस जीव पर गोली का कोई असर ही नहीं हो रहा...

हाँ... गोलियां उसके जिस्म से टकराकर यूं वापिस लौट रही हैं जैसे वह फौलाद का बना हो!

दैत्याकार द्वारा किये चमत्कारों से विचित्र जीव उत्तेजित हो गये और टैंटों से, चारों कर रहे तीनों वैज्ञानिकों पर टूट पड़े. कुछ ही क्षण में सारे टैंट ध्वस्त हो गये। मौजूदा लोगों ने रेत में औंधे लेट कर जान बचाई।

भड़ाम

हाय-मरा

वहां भारी विध्वंस करने के बाद आखिर सबसे बड़ा जीव वैज्ञानिक सुशान्त को लेकर एक ओर को उड़ चला—

बाकी सारी टोली भी उसी जीव के पीछे-पीछे उड़ चली।

फिर, जैसे ही सेनगुप्ता नामक भारतीय वैज्ञानिक को होश आया। वह पागलों की तरह जोर से चीख उठा।

अरे कोई बचाओ... वह दैत्य मेरे दोस्त को ले गया।

अफसोस! हम विवश हैं... काश उसके लिये कुछ किया जा सकता!

ऐसी बातें मत कीजिए प्लीज... जल्दी से बारबलोंस पर अधिकारियों को इस घटना की सूचना पहुँचाइये, शायद वे कोई हल निकाल सकें।

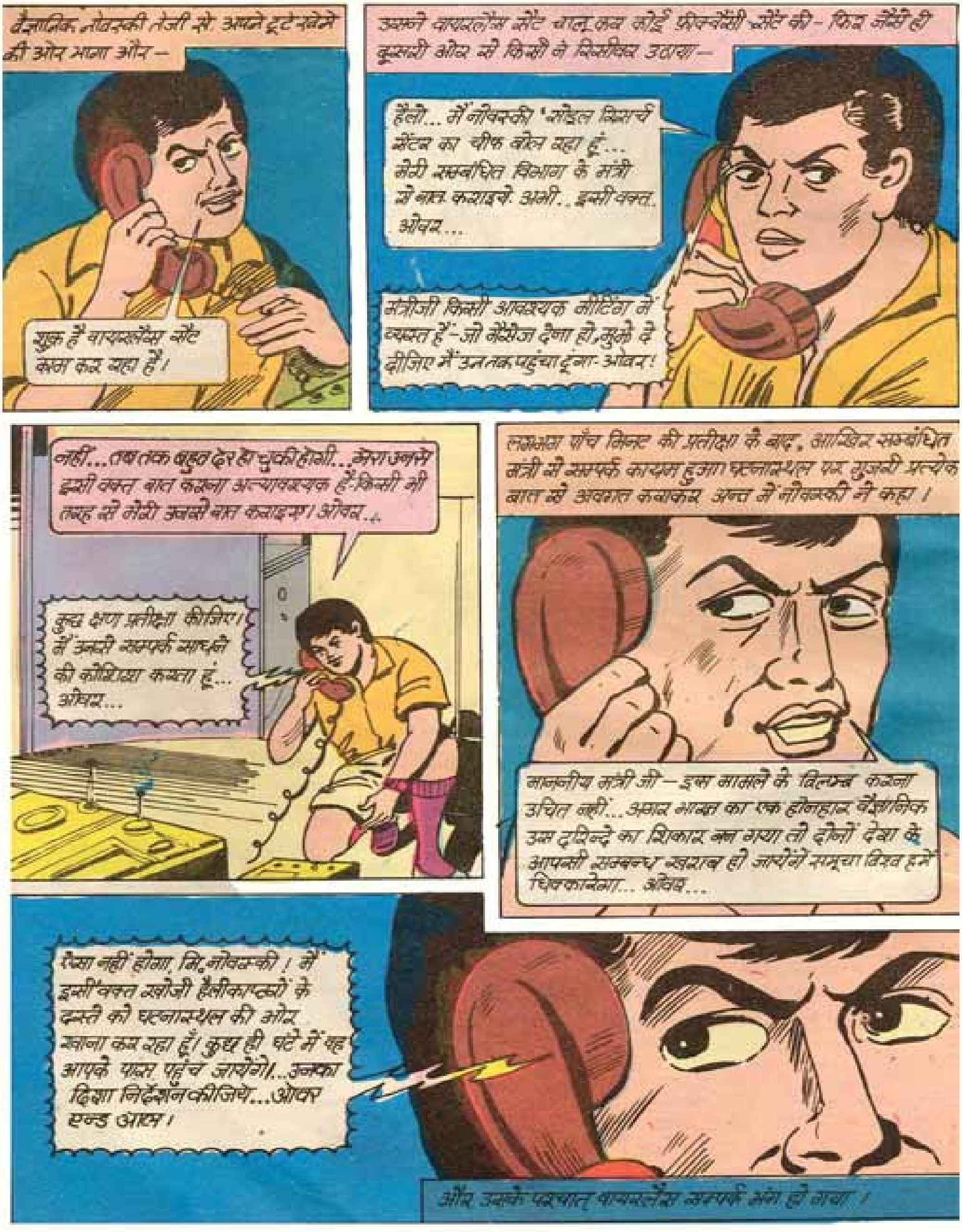
वैज्ञानिक नोवस्की तेजी से अपने दूर संचार केन्द्र की ओर भागा और —
शुक्र है वायरलेस सैट काम कर रहा है।
उसने वायरलेस सैट चालू कर कोई फ्रीक्वेंसी सैट की - फिर जैसे ही दूसरी ओर से किसी ने रिसीवर उठाया —
हैलो... मैं नोवस्की 'मोडल रिसर्च सैंटर का चीफ कोल बोल रहा हूं... मेरी सम्बन्धित विभाग के मंत्री से बात कराइये अभी.. इसी वक्त.. ओवर...
मंत्रीजी किसी आवश्यक मीटिंग में व्यस्त हैं - जो मैसेज देना हो, मुझे दे दीजिए मैं उन तक पहुंचा दूंगा- ओवर!
नहीं... तब तक बहुत देर हो चुकी होगी... मेरा उनसे इसी वक्त बात करना अत्यावश्यक है किसी भी तरह से मेरी उनसे बात कराइये। ओवर..
कुछ क्षण प्रतीक्षा कीजिए। मैं उनसे सम्पर्क साधने की कोशिश करता हूं... ओवर...
लगभग पांच मिनट की प्रतीक्षा के बाद, आखिर सम्बंधित मंत्री से सम्पर्क कायम हुआ। घटनास्थल पर हुई हर एक बात से अवगत कराकर अन्त में नोवस्की ने कहा।
माननीय मंत्री जी — इस मामले के विलम्ब करना उचित नहीं... अगर भारत का एक होनहार वैज्ञानिक उस दरिन्दे का शिकार बन गया तो दोनों देशों के आपसी सम्बन्ध खराब हो जायेंगे समूचा विश्व हमें धिक्कारेगा... ओवर...
पैसा नहीं होगा मि. नोवस्की! मैं इसी वक्त खोजी हैलीकाप्टरों के दस्ते को घटनास्थल की ओर रवाना कर रहा हूं। कुछ ही घंटे में वह आपके पास पहुंच जायेंगे।...उनका दिशा निर्देशन कीजिये...ओवर एन्ड आल।
और उसके पश्चात् वायरलेस सम्पर्क भंग हो गया।

हैलीकॉप्टर घटनास्थल के पास हवा में मंडराते नजर आने लगे।

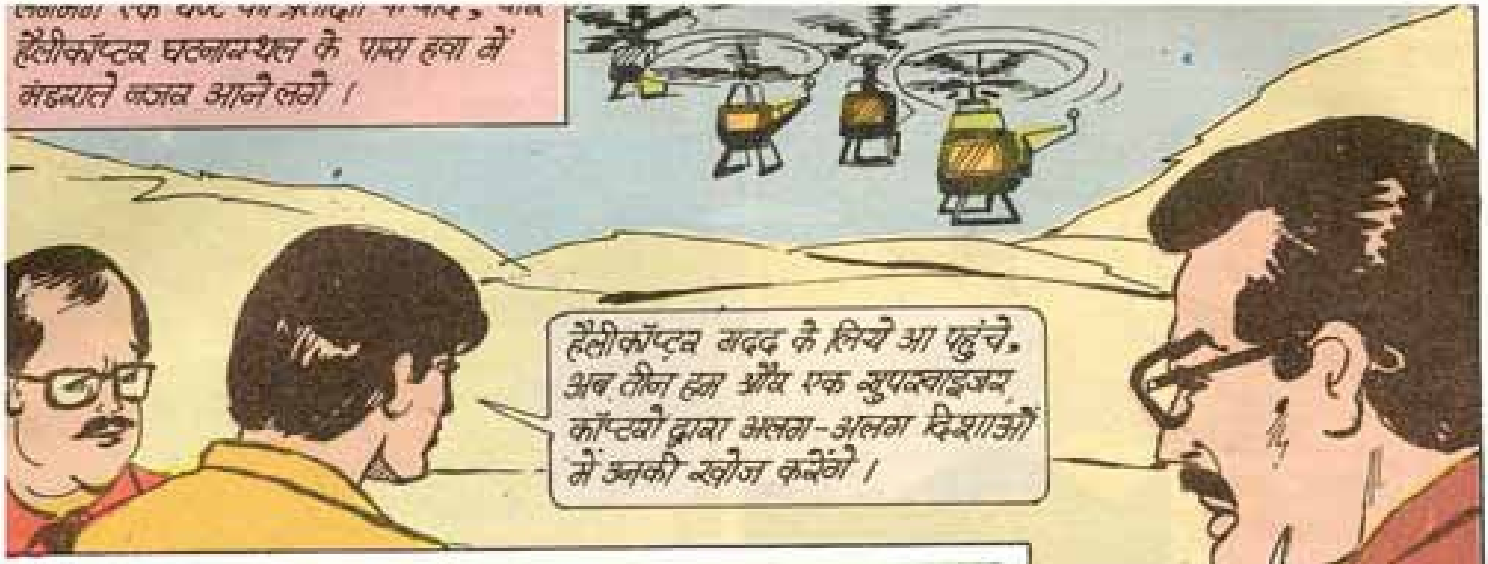
हैलीकॉप्टर मदद के लिये आ पहुंचे. अब तीन हम और एक सुपरवाइजर कॉप्टरों द्वारा अलग-अलग दिशाओं में उनकी खोज करेंगे।
अलग-अलग दिशाओं में क्यों? हम उसी ओर क्यों न उनकी खोज करें, जिधर वे उड़कर गये हैं...?
नहीं, अलग-अलग दिशाओं में ही उन्हें खोजना बेहतर रहेगा। वे उड़ने वाले जीव हैं, क्या पता उड़कर कौन सी दिशा में मुड़ गये हों...?
मेरा एक सुझाव है कि, कोपटरों हम चारों आपस में वायरलेस द्वारा सम्पर्क बनाये रखेंगे, ताकि, किसी एक द्वारा उन्हें देखे जाने की स्थिति में शेष लोगों को व्यर्थ का परिश्रम न करना पड़े।

सेनगुप्ता का सुझाव सभी को पसन्द आया– कुछ ही मिनटों बाद, चारों हैलीकॉप्टर उन्हें लेकर विभिन्न दिशाओं में उड़ गये।

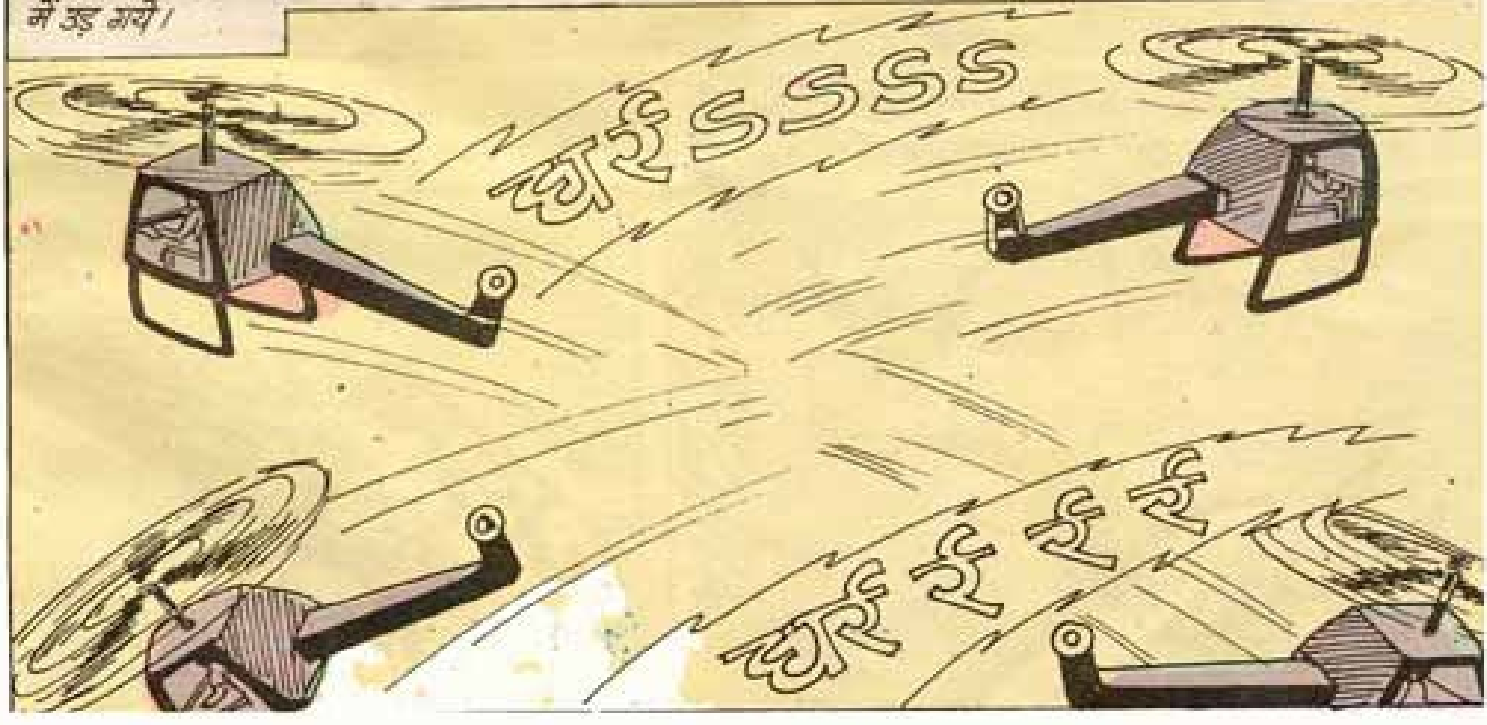

फिर जब नोवस्की का हेलीकॉप्टर नीली चट्टानों वाली, मक्का जैसी ऊँची पहाड़ी को गुजर रहा था, तभी—

घर्रsssss

पाइलट, कॉप्टर थोड़ा और नीचे करो...

अरी लीजिए, भीमाजन !

पाइलट ने कॉप्टर ऊपर नीचे किया और इसके साथ ही नोवस्की को नीचे का दृश्य कुछ और स्पष्ट दिखाई देने लगा।

घर्रsssssssss

ओफ्फ !

ओ हैं... यहीनिक के पक्षी हैं। थोड़ा और नीचे आओ।

परन्तु तभी—

खबरदार पाइलट! कॉप्टर को और नीचे न उतारो, वे जीव शंकित हो गये हैं।

तौबा... वे तो नीचे कॉप्टर की दिशा में झपट रहे हैं। पाइलट, कॉप्टर को ऊंचा उठाकर तेजी से मोड़ो।

पाइलट ने कॉप्टर को ऊंचा करने की कोशिश की, किन्तु तब तक देर हो चुकी थी। बढ़ते हुये उन विचित्र जीवों ने लड़खड़ाते कॉप्टर को हवा में कैद कर लिया।

उफ्फ! मारे गये। अब नहीं।

अचानक ही एक जीव ने तेजी से कॉप्टर के दाईंओर टक्कर मारी। अगले ही पल—

धड़ाम

उफ्फ

हक्क

और उसके दूसरे ही पल एक दूसरा जीव बाईं ओर से कॉप्टर से आ टकराया –

हवा में उड़ते कई भारी-भारी जीव कॉप्टर की छत पर बैठ गये ... जिसके कारण बोझ से दबा, कॉप्टर बजाय ऊपर उठने या मुड़ने के, स्वयमेव ही नीचे झुकने लगा।

अचानक कॉप्टर को फिर एक झटका लगा और वह पाइलट तथा नि. कीवस्की को लिये तेजी से नीचे गिरने लगा।

पाइलट का शेष वाक्य पूरा भी न हो पाया था कि –

कोई तीन घण्टे बाद नोवस्की की होश आया- शरीर में तीव्र पीड़ा होते हुए भी वह उठकर खड़ा हो गया। फिर जैसे ही उसकी दृष्टि पाइलट पर पड़ी- डगमगाते कदमों से वह पाइलट के पास पहुंचा और पहली ही नज़र देखते समझ गया।

अफसोस... सिल्वस्त ने कहां लाकर मारा है बेचारे को... काश मैं इसके लिये कुछ कर सकता!

फिर जैसे ही उसे असली हालत का बोध हुआ, उसके चेहरे पर आश्चर्य मिश्रित उठा-

ताज्जुब है! वे दैत्य पक्षी कहां चले गये?

अरे... वह दूर एक पेड़ पर कौन मानवाकृति लेटी हुई है..?

नोवस्की, उस मानवाकृति के पास पहुंचा। अगले ही पल उसके चेहरे पर हैरानी के भाव पैदा हो गए।

हैं... ये तो सुशान्त है। कहीं इसे भी तो कुछ नहीं हो गया? इसकी नब्ज देखूं!

इत्तफाक का धन्यवाद यह जीवित है अब इसे होश में लाने का इंतजाम करूं।

उनमें से एक हैलीकॉप्टर की ओर दौड़ गया और ध्वस्त हुए हैलीकॉप्टर में से पानी की एक बोतल, तथा फर्स्ट एड का सामान लिए वापिस लौटा। उसने पानी सुशान्त के मुंह में उड़ेला और प्रतीक्षा करने लगा। कोई दस मिनट पश्चात् ही कुनमुना पड़े सुशान्त के शरीर में हरकत पैदा हुई। कराहते हुये उसने आंखें खोलीं।

म... मैं कहाँ हूँ?

घबराओ मत. तुम सुरक्षित हो, सुशान्त!

सुशान्त उठकर बैठ गया।

आ..ए, यहाँ? ये दैत्य पक्षी कहाँ गये?

मालूम नहीं... क्योंकि मैं स्वयं भी थोड़ी देर पहले ही होश में आया हूँ तो, मैं तुम्हें आधी बातें ही बतायी दे सका हूँ!

और फिर नोवस्की ने अपने साथ घटित घटना का विवरण दिया...

...और फिर—

और अब तुम बताओ... तुम्हारे साथ क्या-क्या बीती?

सुशान्त ने उसे संक्षिप्त में आप बीती घटनायें सुनाई, अन्त में बोला।

बाकी बातें इत्मीनान से पूछना मि. नोवस्की... अब किसी तरह से यहाँ से निकलने की बात सोचो!

टूटे हुये हैलीकॉप्टर में चलते हैं शायद अभी भी उसका वायरलैस काम कर रहा हो-।

दोनों ध्वस्त हुये हेलीकॉप्टर में पहुँचे। नोवस्की ने वायरलैस सैट का रिसीवर उठाया – सैट अभी भी चालू था।

सैट चालू है मि. सुशान्त... मैं हैडक्वार्टर में मदद की याचना करता हूँ।

जल्दी कीजिये... कृपया उन्हें बता दें कि मदद भेजने में विलम्ब न करें... मेरी हालत अत्यधिक शोचनीय है।

तत्पश्चात नोवस्की वायरलैस फ्री क्वेंसी सैट करने में व्यस्त हो गया।

उधर, नोवस्की का हैलीकाप्टर ध्वस्त करने के बाद विचित्र जीवों का वह दल एक दूसरी दिशा में उड़ चला और पड़ोसी देश के चन्डोक नगर की पहाड़ियों के ऊपर जाकर रुक गया। उनसे पहले एक चरवाहे की निगाह उस दल पर पड़ी।

हे भगवान... ये कैसे जीव हैं...?

और वह जल्दी-जल्दी अपनी भेड़-बकरियों को वापिस मोड़ने लगा–

कहीं ये मेरी भेड़-बकरियों को न चट कर डालें... भाग लूं!

चरवाहा अभी अपने पशुओं को मोड़ भी न पाया था कि विचित्र जीवों ने उसे देख लिया।

उफ्, देख लिया उन्होंने, अब खैर नहीं...!

एक साथ कई विचित्र जीव उड़े और इधर-उधर दौड़ती भेड़-बकरियों पर टूट पड़े। भागते चरवाहे का पांव एक चट्टान से टकराया और वह नीचे जा गिरा।

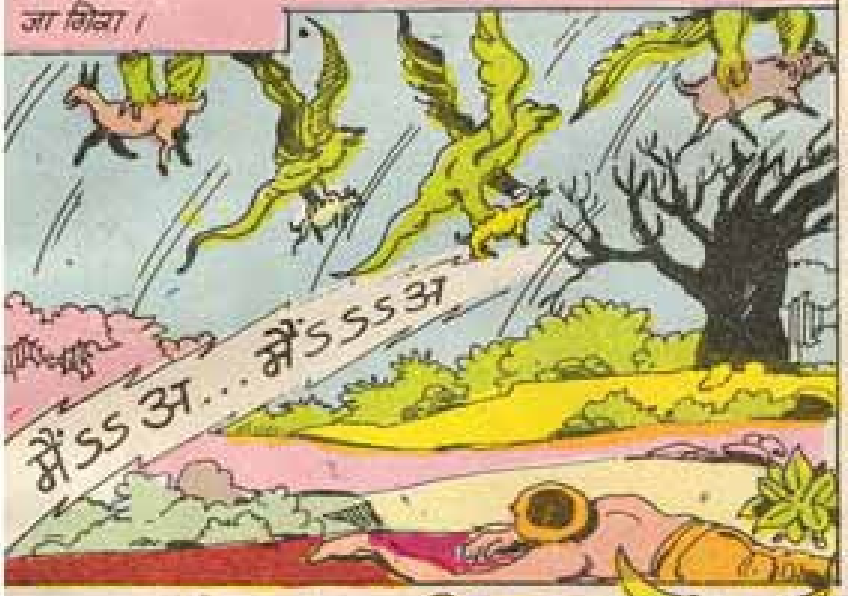

कुछ ही देर में उन विचित्र जीवों ने पूरा रेवड़ चट कर डाला। बाकी बचा सिर्फ चरवाहा... जिसे विचित्र जीव सूत उलझाकर यूं ही छोड़ गये।

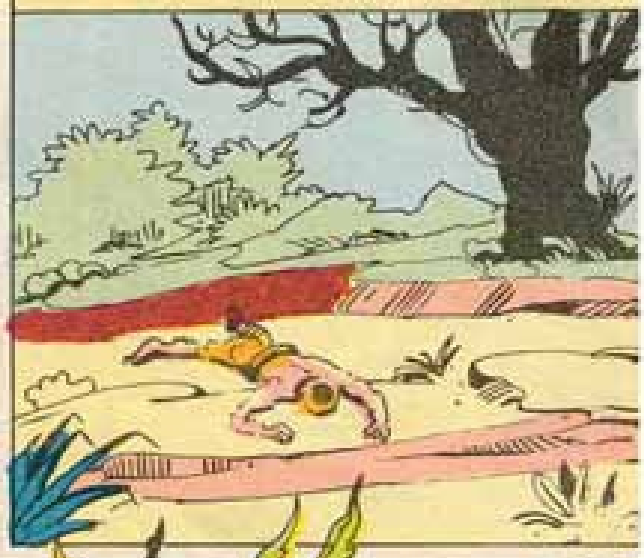

विचित्र जीवों के हमले का दूसरा निशाना बने चंडीगढ़ के नवनवासी। सड़कों पर आती जाती हर उस वस्तु को उन्होंने नष्ट भ्रष्ट करना आरम्भ कर दिया जो जरा सी भी गतिशील हो रही थी। शहर में हा हा. कार मच गये।

पुलिस और फौज सक्रिय हुई— विचित्र जीवों के दल पर बन्दूकों, तोपों द्वारा हमला किया गया।

हैलीकोप्टर, वायुयानों द्वारा अनगनत सिलाचे गये... लेकिन परिणाम कुछ भी न निकला—

तत्पश्चात महाविनाश के बाद वे विचित्र जीव फिर दूसरी दिशा में उड़ गये।

कुछ ही घंटों बाद, पड़ोसी देश के आकाशवाणी नेटवर्क नें. टी. वी. पर ये सूचना प्रसारित हुई।

एक अति आवश्यक सूचना। देश के पश्चिमी हिस्से में कुछ विचित्र दैत्य पक्षियों का झुंड इस देश में आ घुसा है। ये बहुत ही खूंखार हैं। इन्होंने चंद घंटों के अंदर में भयंकर तबाही मचाई है।

इन विचित्र दैत्य पक्षियों ने सैंकड़ों व्यक्तियों को मार डाला है, हजारों वाहन तोड़ डाले हैं... इन पर बन्दूक, तोप के गोलों, यहाँ तक कि बमों का भी कुछ असर नहीं होता... जनता को सूचित किया जाता है कि, वह सावधान रहे... और जैसे ही किसी अन्य जगह पर ये दिखाई दें, तुरन्त सरकार को सूचित करे। सरकार अपने साधनों का भरपूर इस्तेमाल कर इन दैत्यों को नष्ट करने की कोशिश करेगी।

उम्मीद की जाती है कि शीघ्र ही इन खूंखार दरिन्दों पर काबू पा लिया जायेगा...

डाक्टर जॉन की प्रयोगशाला में... फौलाद, लम्बू और डा. जॉन किसी वार्तालाप में व्यस्त थे... तभी—

फौलाद ने आगे बढ़कर रिसीवर उठाकर स्क्रीन का स्विच ऑन कर दिया...

तुरन्त ही स्क्रीन पर टी. वी. न्यूज रीडर की तस्वीर प्रकट हो गई। न्यूज सुनकर सभी के चेहरों पर हैरानी के भाव प्रकट हो गये।

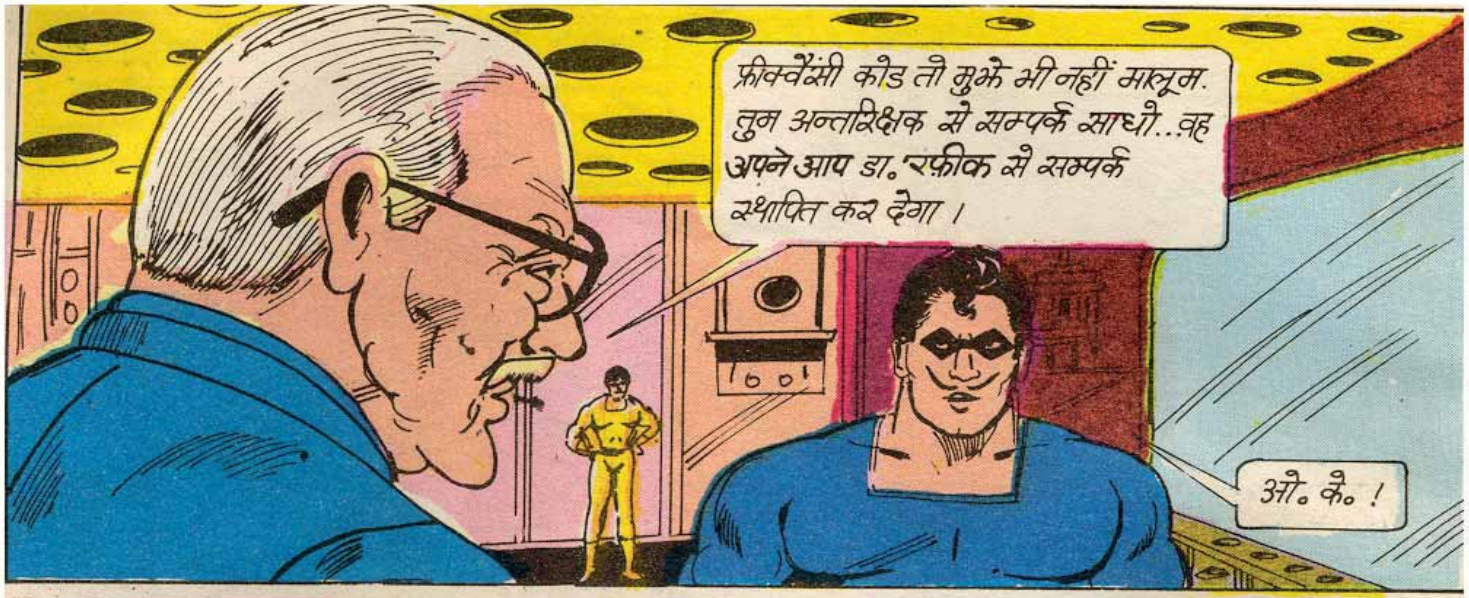
फ्रीक्वेंसी कोड तो मुझे भी नहीं मालूम. तुम अन्तरिक्षक से सम्पर्क साधो..वह अपने आप डा. रफ़ीक से सम्पर्क स्थापित कर देगा।
औ० के० !

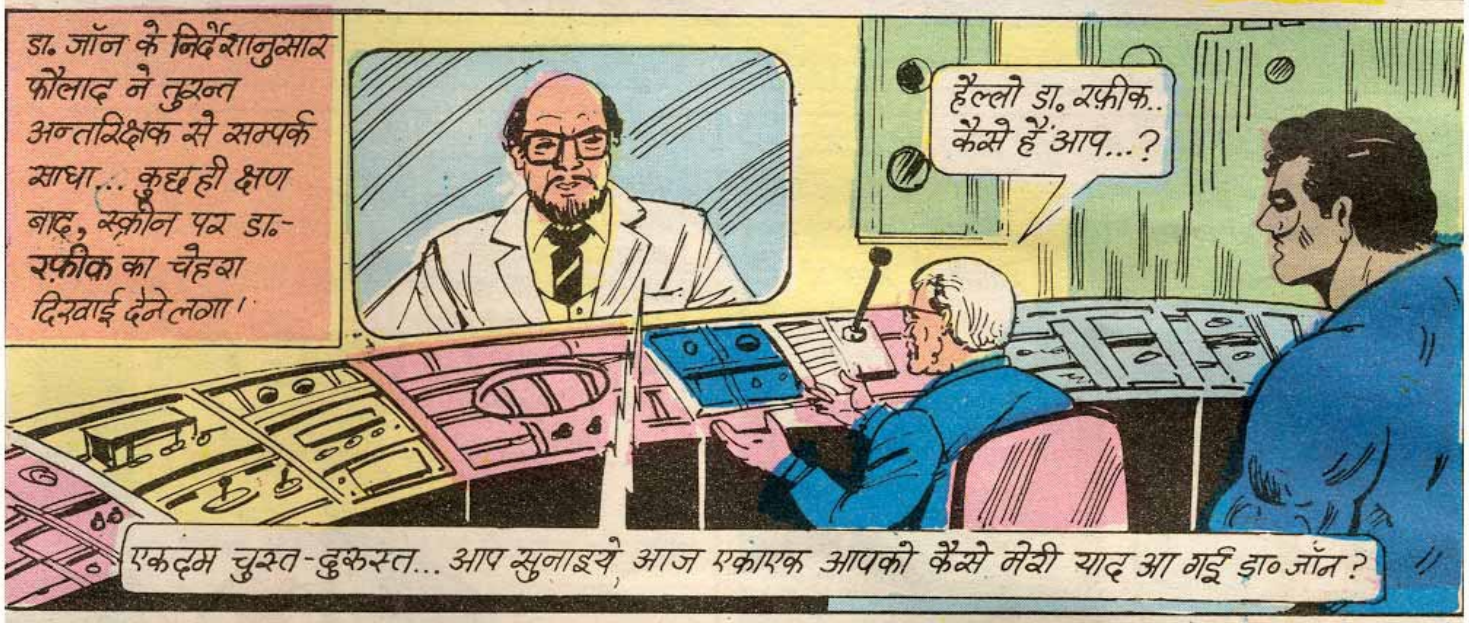
डा. जॉन के निर्देशानुसार फौलाद ने तुरन्त अन्तरिक्षक से सम्पर्क साधा... कुछ ही क्षण बाद, स्क्रीन पर डा० रफ़ीक का चेहरा दिखाई देने लगा।
हैल्लो डा. रफ़ीक.. कैसे हैं आप...?
एकदम चुस्त-दुरुस्त... आप सुनाइये, आज एकाएक आपको कैसे मेरी याद आ गई डा० जॉन ?

मैंने सोचा, पुराने मित्र की कुशलता क्यों न मालूम की जाये, खैर छोड़िये... आपसे मेरा एक स्वार्थ भी है।

बेहिचक होकर फरमाइये, मित्र...

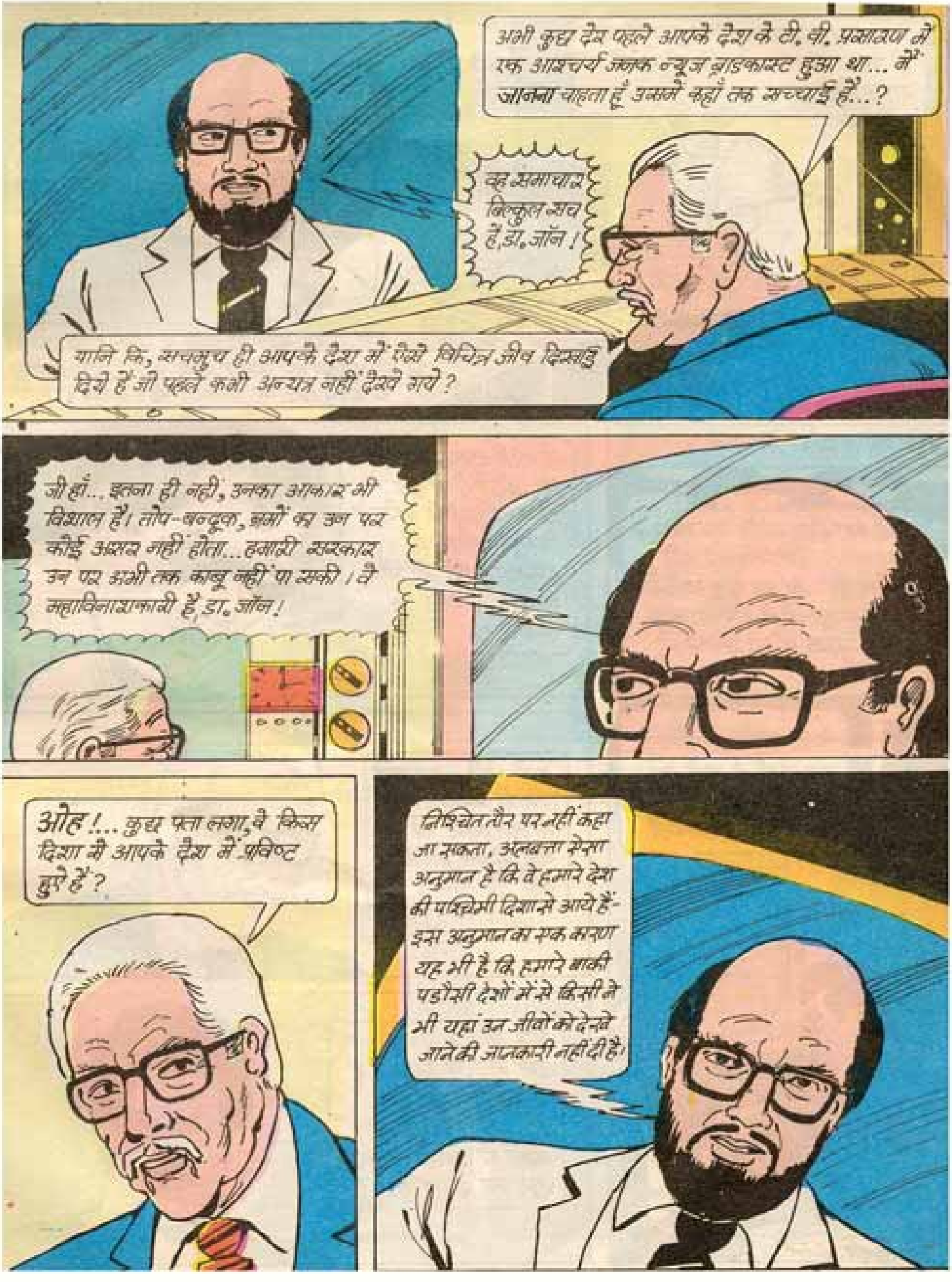
अभी कुछ देर पहले आपके देश के टी. वी. प्रसारण में एक आश्चर्यजनक न्यूज ब्राडकास्ट हुआ था... मैं जानना चाहता हूं उसमें कहां तक सच्चाई है...?
यह समाचार बिल्कुल सच है, डा. जॉन!
यानि कि, सचमुच ही आपके देश में ऐसे विचित्र जीव दिखाई दिये हैं जो पहले कभी अन्यत्र नहीं देखे गये?
जी हां... इतना ही नहीं, उनका आकार भी विशाल है। तोप-बन्दूक, बमों का उन पर कोई असर नहीं होता... हमारी सरकार उन पर अभी तक काबू नहीं पा सकी। वे महाविनाशकारी हैं डा. जॉन!
ओह!... कुछ पता लगा, वे किस दिशा से आपके देश में प्रविष्ट हुये हैं?
निश्चित तौर पर नहीं कहा जा सकता, अलबत्ता मेरा अनुमान है कि वे हमारे देश की पश्चिमी दिशा से आये हैं- इस अनुमान का एक कारण यह भी है कि हमारे बाकी पड़ौसी देशों में से किसी ने भी यहां उन जीवों के देखे जाने की जानकारी नहीं दी है।

धन्यवाद डा. रफ़ीक। मेरी दुआ है, शीघ्र ही उनका खात्मा हो ताकि लोगों को राहत मिले...!

अल्लाह ने चाहा तो ऐसा ही होगा डा. जॉन। हमारे देश की पूरी फौज उन्हें समाप्त करने में लगी हुई है!

और उसके बाद डा. जॉन के संकेत पर फौलाद ने स्क्रीन का स्विच आफ कर दिया। स्क्रीन पर डा. रफ़ीक का चमकता चेहरा गायब हो गया।

फौलाद ने आशंका प्रकट की।

ये तो बड़ा हैरत अंगेज समाचार है जॉन अंकल। ईश्वर न करे यदि पड़ोसी देश उन पर काबू पाने में असफल रहा तो वे भयंकर जीव हमारे मुल्क में भी प्रविष्ट हो जायेंगे।

चिन्ता मत करो फौलाद... हम लोगों के रहते हुये हमारे देश पर कोई विपदा नहीं आ सकती।

तो कोई उपाय सोचिये न... आखिर देंतो इन दैत्य पक्षियों के बारे में विस्तृत जानकारी हासिल करने में और लक्कू पड़ोसी देश में जायें...?

अभी नहीं... पर यदि जरूरी समझा गया तो तुम लोगों को वहां भेजने में भी नहीं हिचकूँगा।

और यदि अचानक इस बीच, वे हमारे देश में पहुँच गये तो...? और उन्होंने वहाँ भी वैसी ही तबाही मचानी शुरू कर दी तब?

वैसी नौबत आने से पहले ही मैं उनका कोई निदान खोज लूंगा। तुम एक बार फिर से अंतरिक्षक को निर्देश देकर डा. गुस्ताव से सम्पर्क स्थापित करवाओ।
जैसी आपकी इच्छा!
फौलाद ने अन्तरिक्षक को निर्देश देकर उसे मानवी स्थित डा. गुस्ताव से सम्पर्क साधने का निर्देश दे दिया.

डा. गुस्ताव, ऊस के चोटी के वैज्ञानिक थे। अवकाश शास्त्र में उन्हें महारत हासिल थी, डा. जॉन के पक्के मित्र थे। जिस समय, डा. जॉन के निर्देशानुसार उपग्रह अन्तरिक्षक ने उनसे सम्पर्क साधन किया। और जैसे ही उनके टी. वी. स्क्रीन में सन्देश ग्रहण करने की लाइनें उभरी.. ने तुरन्त स्क्रीन के सामने पहुंच गये।
स्क्रीन पर डा. जॉन का चेहरा प्रकट हुआ।
गुड डे डा. गुस्ताव...
सुप्रभात...सुप्रभात, कैसे हैं आप डा. जॉन?

मैंने आपसे एक जानकारी हासिल करने के लिये कष्ट दिया है।
आदेश दीजिए...

आपने हमारे पड़ोसी देश द्वारा प्रसारित टी. वी. न्यूज बुलेटिन तो सुना ही होगा !
हाँ... कहीं आप उन दैत्य पक्षियों के बारे में तो जानकारी हासिल करना नहीं चाहते ?

आपका विचार ठीक है। मुझे उन्हीं के बारे में जानकारी हासिल करनी है।

उन दैत्य पक्षियों के बारे में हमारे यहाँ के वैज्ञानिक भी हैरान हैं डा. जॉन। अफसोसवश यह दैत्य पक्षी हमारे देश की मिट्टी में ही पैदा हुये हैं।

वो कैसे..?

डा. गुस्ताव ने उन्हें सारी बातें बताईं... अन्त में वे बोले—
इस बारे में यदि आप 'रूसेल रिसर्च सेंटर' के चीफ मि. नोवस्की से बातें करें तो बेहतर हो.. वैसे मेरा व्यक्तिगत विचार ये भी है कि आपके देश के वैज्ञानिक मि. मुशांत इस बारे में अच्छी ज्यादा ठोस बातें बता सकते हैं।

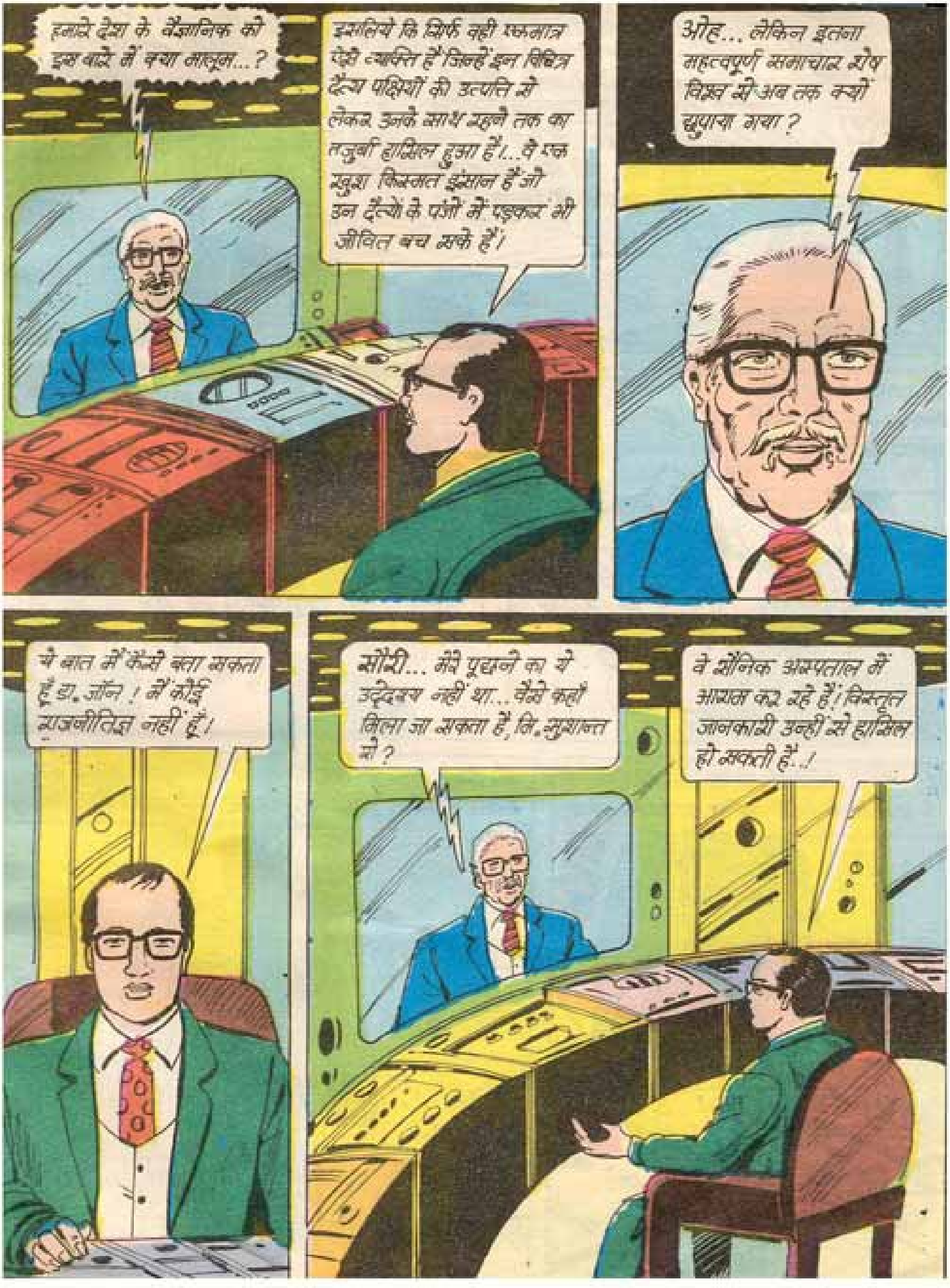
हमारे देश के वैज्ञानिक को इस बारे में क्या मालूम...?
इसलिये कि सिर्फ वही एकमात्र ऐसे व्यक्ति हैं जिन्हें इन विचित्र दैत्य पक्षियों की उत्पत्ति से लेकर उनके साथ रहने तक का तजुर्बा हासिल हुआ है।...वे एक खुश किस्मत इंसान हैं जो उन दैत्यों के पंजों में पड़कर भी जीवित बच सके हैं।
ओह... लेकिन इतना महत्वपूर्ण समाचार शेष विश्व से अब तक क्यों छुपाया गया?
ये बात मैं कैसे बता सकता हूँ डा. जॉन! मैं कोई राजनीतिज्ञ नहीं हूँ।
सॉरी... मेरे पूछने का ये उद्देश्य नहीं था... वैसे कहाँ मिला जा सकता है, मि. सुशान्त को?
वे सैनिक अस्पताल में भरती कर रहे हैं। विस्तृत जानकारी उन्हीं से हासिल हो सकती है...!

मैं फौलाद और लम्बू को आपके पास भेज रहा हूँ। कृपया इस बारे में उनकी मदद करें!
अवश्य...मैं अभी और पन्द्रह मिनट यहाँ हूँ... आप, उन्हें मेरे पास भेज दीजिए। मैं उन्हें सुशान्त से मिलवा दूँगा।

डा. बुस्ताव से वार्तालाप समाप्त कर, डा. जॉन ने फौलाद और लम्बू से कहा।
वार्तालाप सुना तुम दोनों ने...? तुम लोगों को तुरन्त मास्को पहुँचना है।
हम तो कब से तैयार बैठे हैं अंकल! बस आपके आदेश का इंतजार था।

डा. जॉन ने लैबोरेटरी स्थित अनगिनत मशीनों के जाल में से किसी मशीन का स्विच दबाया...
खट...

और उसके साथ ही लम्बू की कलाई एवं बिड़ाये फौलाद का जिस्म वैद्युतिक प्रक्रिया से ट्रांसमिट होने लगा।

कुछ ही देर बाद, वह लम्बू को साथ लिये, ठीक उसी कक्ष में प्रकट हुआ, जहाँ डा. गुस्ताव बैठे हुये थे। इतनी जल्दी, दोनों को वहाँ मौजूद देख डा. गुस्ताव भी आश्चर्य-चकित रह गये।

नमस्कार डा. गुस्ताव! हम हाजिर हैं...!

आश्चर्य है... तुमने तुम दोनों के इतनी जल्दी यहाँ पहुँचने की उम्मीद न थी?

जॉन अंकल के लिये कोई काम कठिन नहीं डा. गुस्ताव... वे चाहते तो, सैकिन्डों में हमें यहाँ पहुँचा सकते थे... उनकी वैज्ञानिक क्षमतायें अद्‌भुत हैं।

सचमुच प्रशंसनीय हैं डा. जॉन... पर अब बातों में वक्त गवांना उचित नहीं। आओ मैं तुम्हें वैज्ञानिक सुरंगांत के बारे लेकर चलता हूँ।

कहकर डा. गुस्ताव उठ खड़े हुये।

कुछ ही देर बाद तीनों एक कार में बैठे, मास्को स्थित एक मिलिट्री अस्पताल की ओर जा रहे थे।

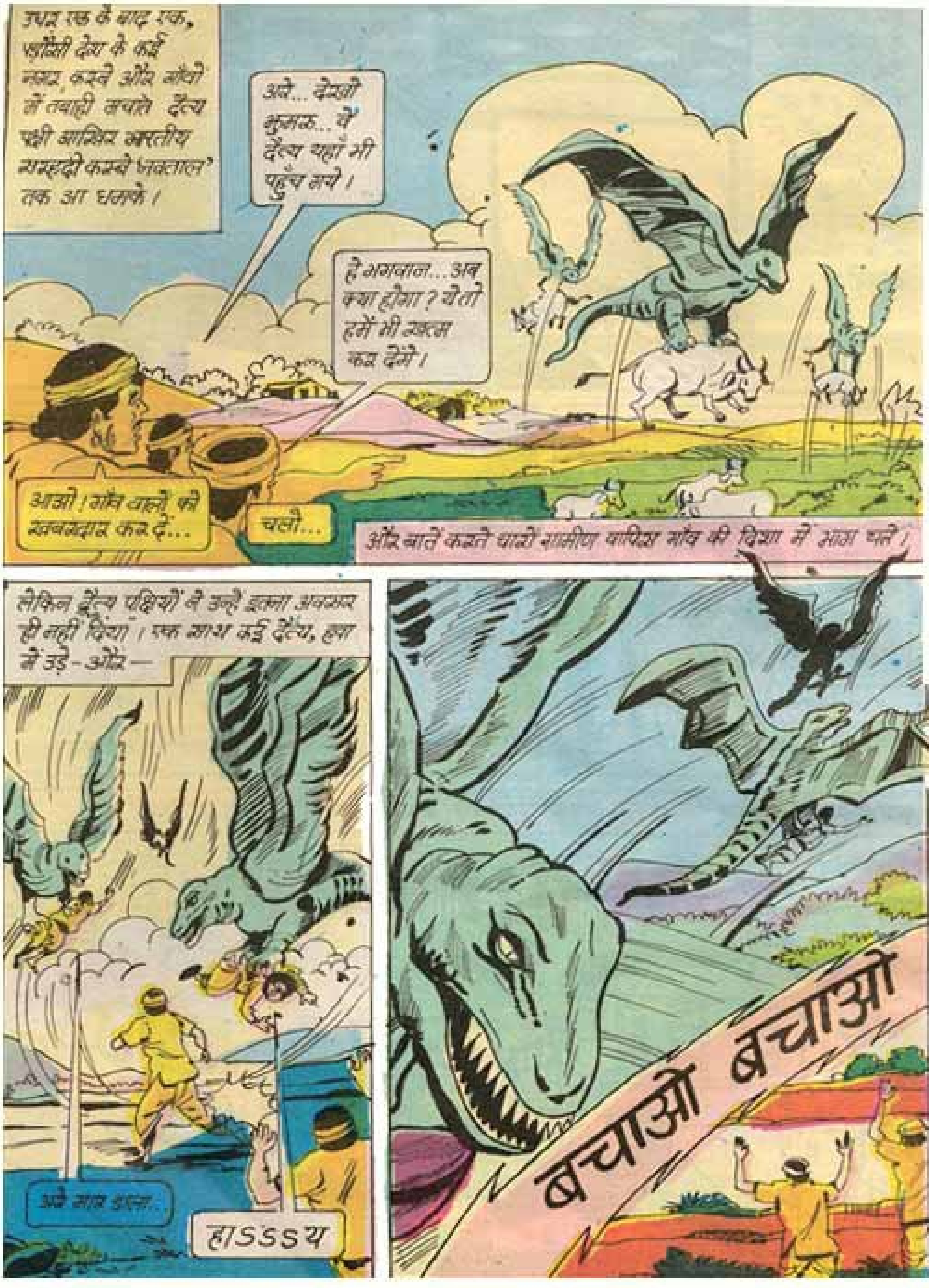
उधर रक्त के बाद रक्त, पड़ोसी देश के कई नगर, कस्बे और गाँवों में तबाही मचाते दैत्य पक्षी आखिर भारतीय सरहदी कस्बे भक्तगढ़ तक आ धमके।
अरे... देखो बुमरु... ये दैत्य यहाँ भी पहुँच गये।
हे भगवान... अब क्या होगा? ये तो हमें भी खत्म कर देंगे।
आओ! गाँव वालों को खबरदार कर दें...
चलो...
और बातें करने वाले शमीम पापीस गाँव की दिशा में भाग चले।
लेकिन दैत्य पक्षियों ने उन्हें इतना अवसर ही नहीं दिया। एक साथ कई दैत्य, हवा में उड़े - और —
अरे साब इधर...
hssssy
बचाओ बचाओ

गाँव से दूर, एक नौजवान ने इन दैत्य पक्षियों को आसमान के ऊपर मंडराते देखा।

ओह... ये तो वही दरिन्दे हैं जो पड़ोसी देशों में तबाही मचाये हुये थे... जल्दी से निकटवर्ती चौकी में जाकर इनके आगमन की सूचना पहुंचाऊं।

अगले ही क्षण वह तेजी से निकटवर्ती सैनिक चौकी की ओर दौड़ लिया।

सूचना मिलने की देर थी, कि भारतीय वायुसेना के कई वनवर्षक आकाश पर उड़ते दिखाई देने लगे।

भारी-भारी टैंकों का एक दस्ता, जिसमें लम्बी दूरी तक मार करने वाली तोपें लगी थीं, तेजी से रेगिस्तानी जमीन पर आगे बढ़ चला।

ऊपर मंडराते, वनवर्षक यानों एवं जमीन पर गर्जना करते टैंकों की आवाज से दरिन्दे कुछ सहमे, और वह गाँव वालों का विनाश करना छोड़... वापिस पड़ोसी देश की सरहद की ओर उड़ चले...। वनवर्षक विमानों एवं टैंकों ने उन्हें सरहद के परे खदेड़ दिया।

लेकिन रक्षा का ये कोई स्थायी विकल्प न था। रक्षा मंत्रालय में तुरन्त एक महत्त्वपूर्ण बैठक की गई... और उसमें यही निश्चय लिया गया कि डा. जॉन से प्रार्थना की जाये, कि वे इस बिन बुलाई मुसीबत से देश को छुटकारा दिलायें परिणाम स्वरूप... रक्षामंत्री ने तुरन्त डा. जॉन से फोन पर सम्पर्क किया।

डा. जॉन का अनुमान सही था। जैसे ही उन्होंने मंत्रीजी से वार्तालाप खत्म किया, एक स्क्रीन पर मैसेज ग्रहण करने वाली लाइटें इंडीकेशन देने लगीं।
सी.ऽऽ.सी.ऽऽऽ.....
सन्देश फौलाद का होना चाहिये... देखते हैं, क्या समाचार दिया है, वह।
डा. जॉन द्वारा एक बटन कम्पर्स किये जाते ही स्क्रीन पर फौलाद और अम्बू सहित, अस्पताल में विश्राम कर रहे सुशान्त के चेहरे प्रकट हुए-
क्या समाचार है फौलाद?
मैंने मि.सुशान्त से वार्तालाप किया है अंकल उन दैत्य जीवों के बारे में बड़ी हैरत अंगेज बातें मालूम हुई हैं।
फुरर विवरण दोगे?
अभी नहीं... लेकिन आपके पास पहुँचकर पूरा विवरण दूँगा। क्या आप मि.सुशान्त से बात करना चाहेंगे?
अवश्य... पर स्क्रीन पर नहीं... अगर वे स्वस्थ हो गये हों तो, उन्हें अपने साथ ही ले आओ!
अब वे ठीक हैं और स्वयं आपसे मिलने के इच्छुक हैं। वे चाहते हैं कि उन दैत्यों की समाप्ति का श्रेय अपने ही देश को मिले!

देश के ऐसे होनहार एवं देशभक्त वैज्ञानिक पर गर्व है। मैं ट्रांसमिट प्रक्रिया चालू कर रहा हूँ। तुम उन्हें अपने साथ लेकर तुरन्त यहाँ पहुँचो।
ओ. के. अंकल!

एक बार फिर से डा. जॉन ने ट्रांसमिशन प्रक्रिया चालू की। कुछ ही क्षण बाद फ्रैंचब्रन, लम्बू सहित मि. सुशान्त लैबोरेटरी में मौजूद नजर आये और उनके कुछ ही क्षणोपरान्त वे चारों वार्तालाप में व्यस्त हो गये। सुशान्त ने उन्हें आरम्भ से लेकर अन्त तक अपने साथ घटी सारी घटनायें सुनाईं। सुनकर डा. जॉन ने कहा—
उन दैत्यों के चंगुल से छूटने पर मेरी बधाई मि. सुशान्त!
धन्य वाद डा. जॉन!

कुछ मालूम हुआ, इन भयंकर जीवों की उत्पत्ति के बारे में..?

विशेष कुछ नहीं... सिवाय अनुमान के...

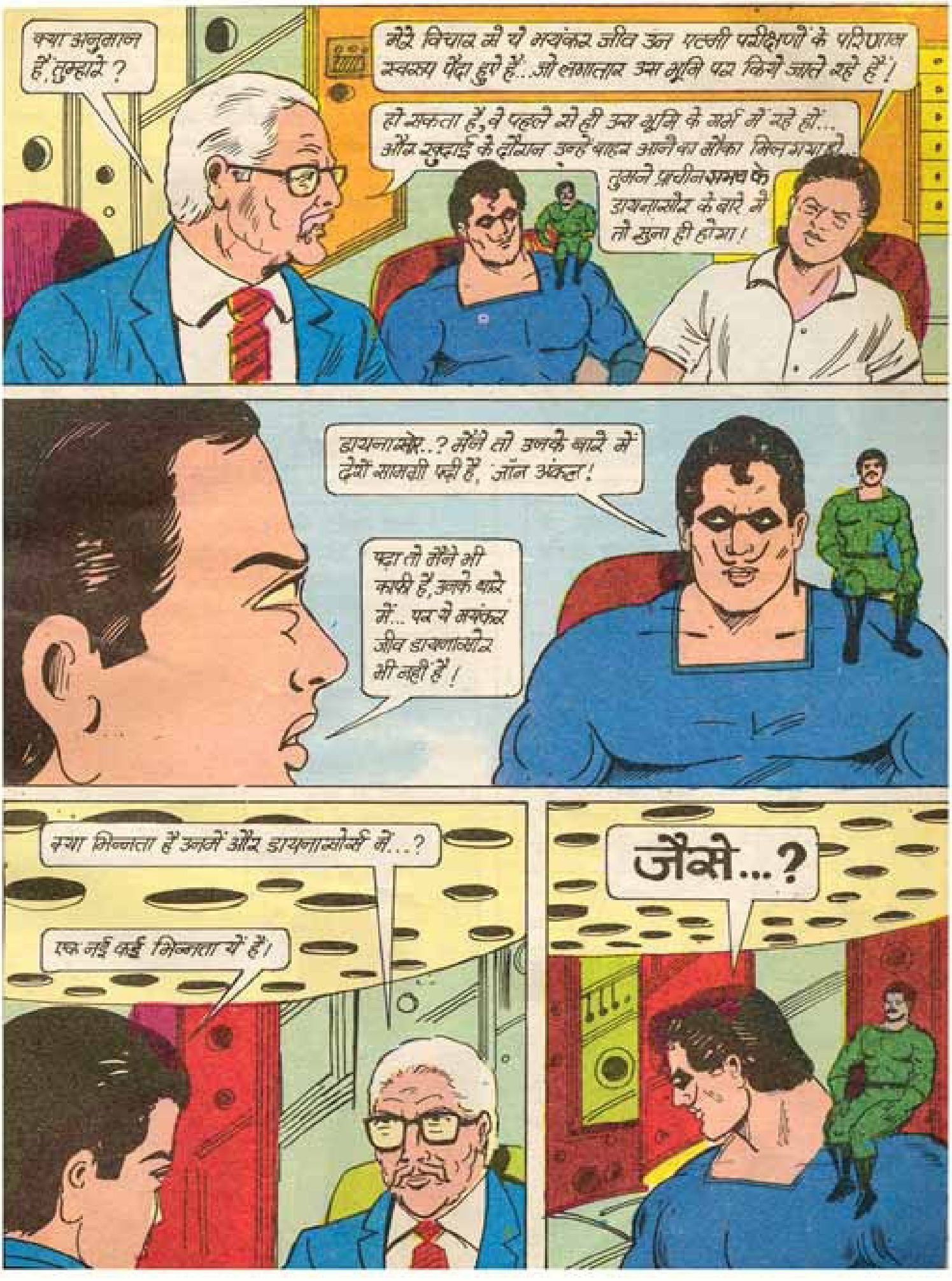
क्या अनुमान है तुम्हारे ?
मेरे विचार से ये भयंकर जीव उन एटमी परीक्षणों के परिणाम स्वरूप पैदा हुये हैं.. जो लगातार उस भूमि पर किये जाते रहे हैं !
हो सकता है, वे पहले से ही उस भूमि के गर्भ में रहे हों... और खुदाई के दौरान उन्हें पहली बार मौका मिल गया हो..
तुमने प्राचीन समय के डायनासौर के बारे में तो सुना ही होगा !
डायनासौर..? मैंने तो उनके बारे में ढेरों सामग्री पढ़ी है, जॉन अंकल !
पढ़ा तो मैंने भी काफी है, उनके बारे में... पर ये भयंकर जीव डायनासौर भी नहीं हैं !
क्या भिन्नता है उनमें और डायनासौर्स में...?
एक नई नई भिन्नता ये है।
जैसे...?

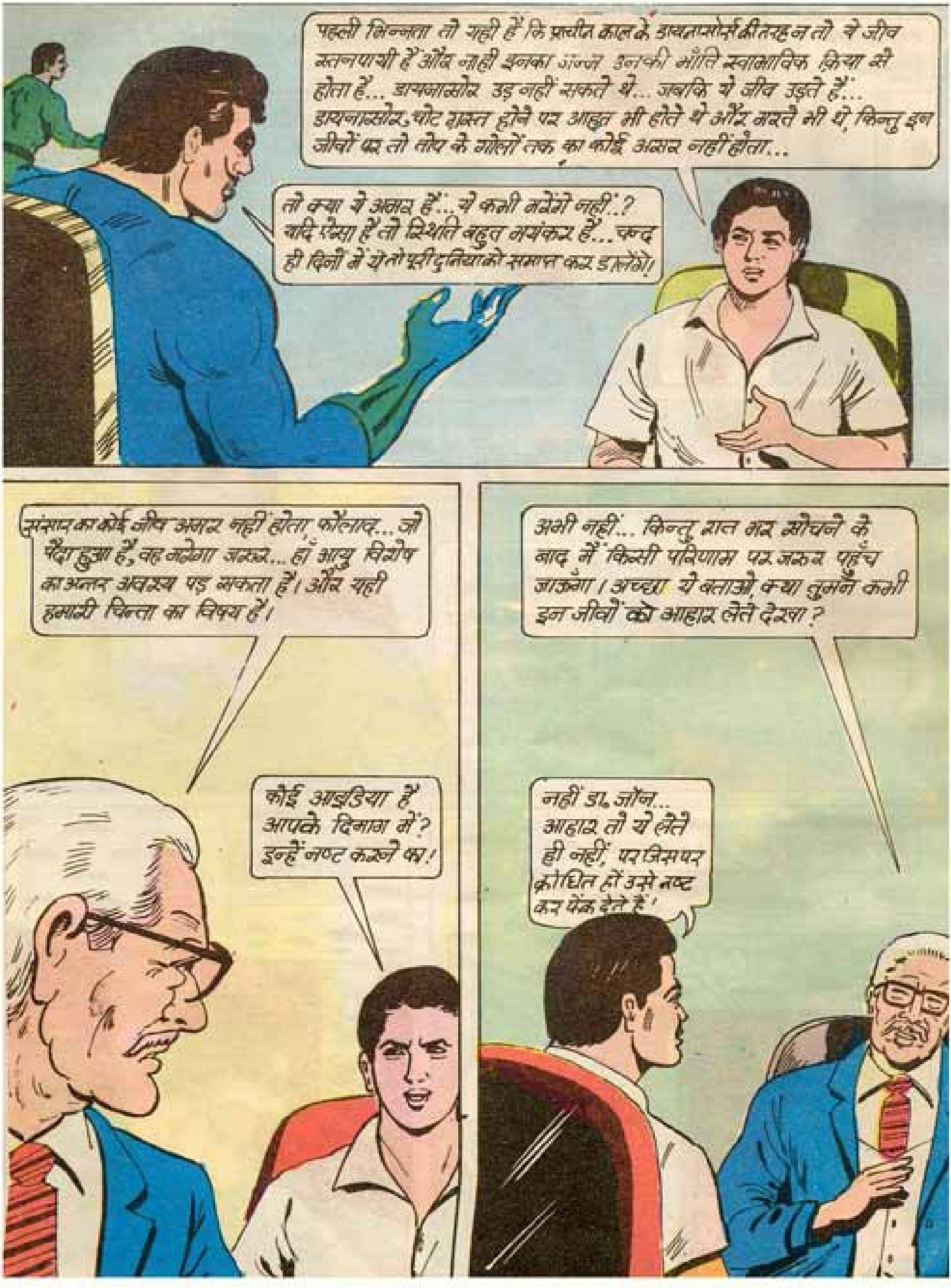
पहली चिन्ता तो यही है कि प्रागैतिहासिक काल के डायनासोर की तरह न तो ये जीव रक्तपायी हैं और नाही इनका जीवन उनकी भाँति स्वाभाविक क्रिया से होता है... डायनासोर उड़ नहीं सकते थे... जबकि ये जीव उड़ते हैं... डायनासोर चोट ग्रस्त होने पर आहत भी होते थे और मरते भी थे, किन्तु इन जीवों पर तो तोप के गोलों तक का कोई असर नहीं होता...
तो क्या ये अमर हैं... ये कभी मरेंगे नहीं..? यदि ऐसा है तो स्थिति बहुत भयंकर है... चन्द ही दिनों में ये तो पूरी दुनिया को समाप्त कर डालेंगे!
संसार का कोई जीव अमर नहीं होता, फोलाद... जो पैदा हुआ है, वह मरेगा जरूर... हाँ आयु विशेष का अन्तर अवश्य पड़ सकता है। और यही हमारी चिन्ता का विषय है।
कोई आइडिया है आपके दिमाग में? इन्हें नष्ट करने का!
अभी नहीं... किन्तु रात भर सोचने के बाद में किसी परिणाम पर जरूर पहुँच जाऊँगा। अच्छा ये बताओ, क्या तुमने कभी इन जीवों को आहार लेते देखा?
नहीं डा. जॉन... आहार तो ये लेते ही नहीं, पर जिस पर क्रोधित हों उसे नष्ट कर देते हैं।

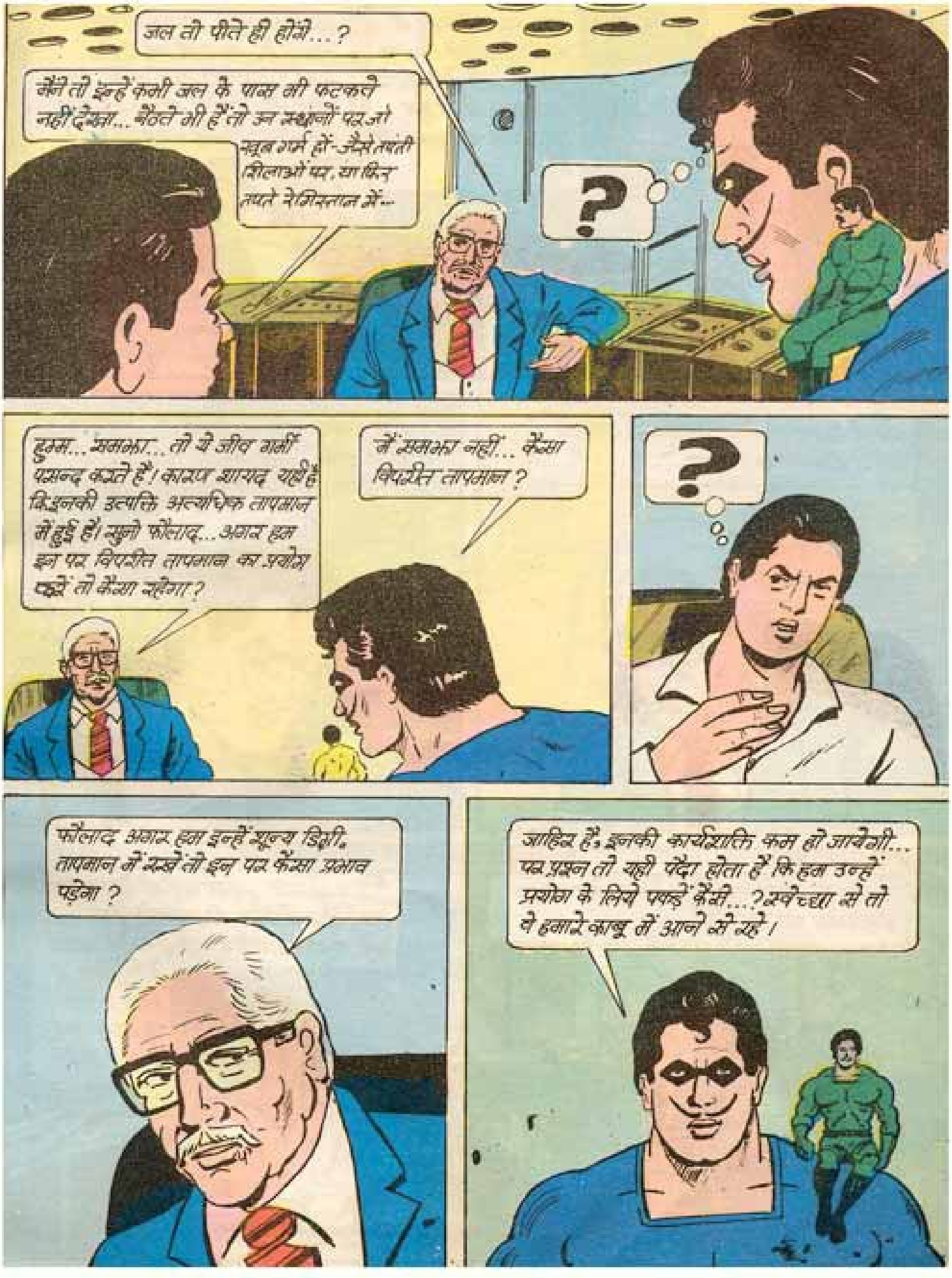
जल तो पीते ही होंगे...?
वैसे तो इन्हें कभी जल के पास भी फटकने नहीं देता... बैठते भी हैं तो उन स्थानों पर जो खूब गर्म हों-जैसे तपती शिलाओं पर, या फिर तपते रेगिस्तान में...
?
हुम्म... समझा... तो ये जीव गर्मी पसन्द करते हैं। कारण शायद यही है कि इनकी उत्पत्ति अत्यधिक तापमान में हुई है। सुनो फौलाद... अगर हम इन पर विपरीत तापमान का प्रयोग करें तो कैसा रहेगा?
मैं समझा नहीं... कैसा विपरीत तापमान?
?
फौलाद अगर हम इन्हें शून्य डिग्री तापमान में रखें तो इन पर कैसा प्रभाव पड़ेगा?
जाहिर है, इनकी कार्यशक्ति कम हो जायेगी... पर प्रश्न तो यही पैदा होता है कि हम उन्हें प्रयोग के लिये पकड़ें कैसे...? इच्छाधारी सर्प तो वे हमारे काबू में आने से रहे।

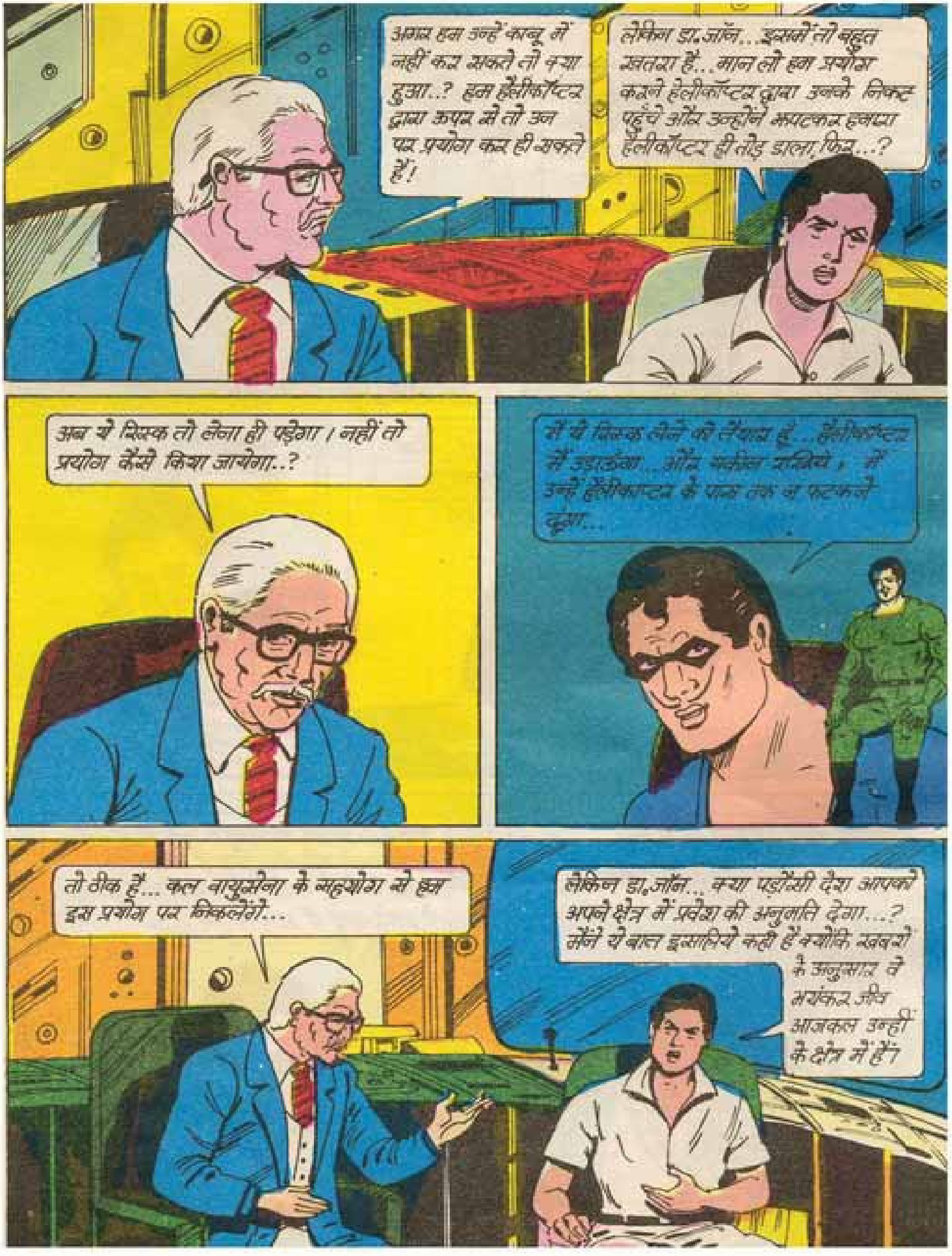
अगर हम उन्हें काबू में नहीं कर सकते तो क्या हुआ..? हम हैलीकॉप्टर द्वारा ऊपर से तो उन पर प्रयोग कर ही सकते हैं!
लेकिन डा.जॉन...इसमें तो बहुत खतरा है...मान लो हम प्रयोग करने हेलीकॉप्टर द्वारा उनके निकट पहुंचे और उन्होंने झपटकर हमारा हैलीकॉप्टर ही तोड़ डाला फिर...?
अब ये रिस्क तो लेना ही पड़ेगा। नहीं तो प्रयोग कैसे किया जायेगा..?
मैं ये रिस्क लेने को तैयार हूं...हैलीकॉप्टर मैं उड़ाऊंगा...और मकसूद साहिबा, मैं उन्हें हैलीकॉप्टर के पास तक न फटकने दूंगा...
तो ठीक है... कल वायुसेना के सहयोग से हम इस प्रयोग पर निकलेंगे...
लेकिन डा.जॉन... क्या पड़ोसी देश आपको अपने क्षेत्र में प्रवेश की अनुमति देगा...? मैंने ये बात इसलिये कही है क्योंकि खबरों के अनुसार वे भयंकर जीव आजकल उन्हीं के क्षेत्र में हैं।

मेरा विचार है, वे इजाजत दे देंगे... क्योंकि ये हत्यारी ही नहीं, उनको भी विपत्ति है... और ऐसे विपत्तिकाल में अजनबी तिक द्वीप-भाव वक्त: ही समाप्त हो जाते हैं!
ओ. के. अंकल! आप उनसे सम्पर्क स्थापित करें... तब तक मैं मि. खुशान्त को अपने द्वीप की सैर करा लाऊँ।
फौलाद, सुशान्त को साथ लेकर बाहर चला गया... डा. जॉन रेडियो मशीन द्वारा पड़ोसी देश से सम्पर्क स्थापित करने की कोशिश करने लगे।

दूसरे दिन –
वे रहे वे दैत्य पक्षी... मैं हैलीकॉप्टर को ठीक उनके ऊपर लिये चलता हूँ... आप लोग तैयार रहें।
हम तैयार हैं!
मैं भी...

थोड़ी ही देर में, हैलीकॉप्टर दैत्य पक्षियों के ठीक ऊपर मंडराने लगा। सुलक्षण वे दैत्य पक्षी चौंकने लगे
क्रैंक... क्रैंक... क्रैंक
वे चौंकने लगे हैं, जॉन अंकल... जल्दी से जहरीले पानी की बौछारें कीजिए...

हैलीकॉप्टर थोड़ा और नीचे करो फौलाद, इतनी ऊँचाई से डाला गया पानी सही निशाने पर नहीं पहुँचेगा। बेकार हो जायेगा.

उधर से हेलीकॉप्टर आने की आवाज सुनाई दी... क्रोधित हुये दैत्य पक्षी, उस पर झपटने को हुये... तभी —
सर्रर्रर्र
बर्फीले पानी की बौछारें उन पर पड़ने लगीं...
परिणाम अप्रत्याशित निकला —
बर्फीले पानी की बौछारें जारी रखिये अंकल... दैत्य पक्षियों के शरीर सिकुड़ने लगे हैं।
मैं भी देख रहा हूँ, उनमें घबराहट फैल गई है।
उनमें से कुछ उड़ने की कोशिश कर रहे हैं... किन्तु उड़ नहीं पा रहे... अर्रर्र कुछ तो रेत पर लुढ़क भी गये...
आपका प्रयोग सफल रहा डा. जॉन... दैत्य पक्षियों की प्रतिरोधक शक्ति क्षीण हो गई है... एक के बाद एक कई पक्षी रेत पर गिरे हुये नजर आ रहे हैं।
क्या ये मर गये, जान अंकल...?
नहीं... सिर्फ कुछ देर के लिये बेहोश हुए हैं। बौछारें और तेज करो..
डा. जॉन के आदेशानुसार बर्फीले पानी की तेज बौछारें और भी तेजी से दैत्य पक्षियों पर डाली जाने लगीं। कुछ ही देर में दैत्यपक्षियों का पूरा झुंड बेहोश हो रेत पर गिरता नजर आया।
अंकल! हेलीकॉप्टर नीचे उतारूं? एक छोटा दैत्य पक्षी साथ ले चलें... प्रयोग के लिए!

हरज ही क्या है... यदि प्रयोग के लिये हमें ये महत्वपूर्ण जीव...

हरगीज नहीं... हम प्रयोग कर चुके... कॉप्टर ऊपर उठाओ... और वापिस लौट चलो...। बाकी का काम हमारी सेना करेगी।

तत्काल ही डा. जॉन ने सुशान्त की बात काट दी।

वक्त को पहचानो मि. सुशान्त. मैं यकीन दिलाता हूँ हम इनमें से एक पर जरूर प्रयोग करेंगे... लेकिन बाद में... अभी ये अस्थायी रूप से बेहोश हुये हैं... होश में आते ही इनका क्रोध और भी भड़केगा...

अंकल ठीक कह रहे हैं मि० सुशान्त, इन्हें दुबारा बेहोश करने के लिये हम क्लोरोफार्म पानी भी स्पर्ची चुके हैं।

डा. जॉन का आदेश सर्वोपरि था। फैलाद ने हैलीकॉप्टर ऊपर उठाया... और वापिस द्वीप की दिशा में मोड़ दिया।

द्वीप पर पहुँच कर डा. जॉन ने सबसे पहले देश के सेनाध्यक्ष को फोन किया। लाइन मिलते ही उन्होंने सेनाध्यक्ष से कहा—

मैंने उन दैत्य पक्षियों को काबू में करने का उपाय खोज लिया है, श्रीमान!

अच्छा...? मुझे भी तो बताइये, डा. जॉन!

पहले ये बताइये... क्या आपकी सेनाके आर्मडेपो में ऐसे बम हैं जो क्षेत्र विशेष के वातावरण को शून्य डिग्री. पर ले आयें?

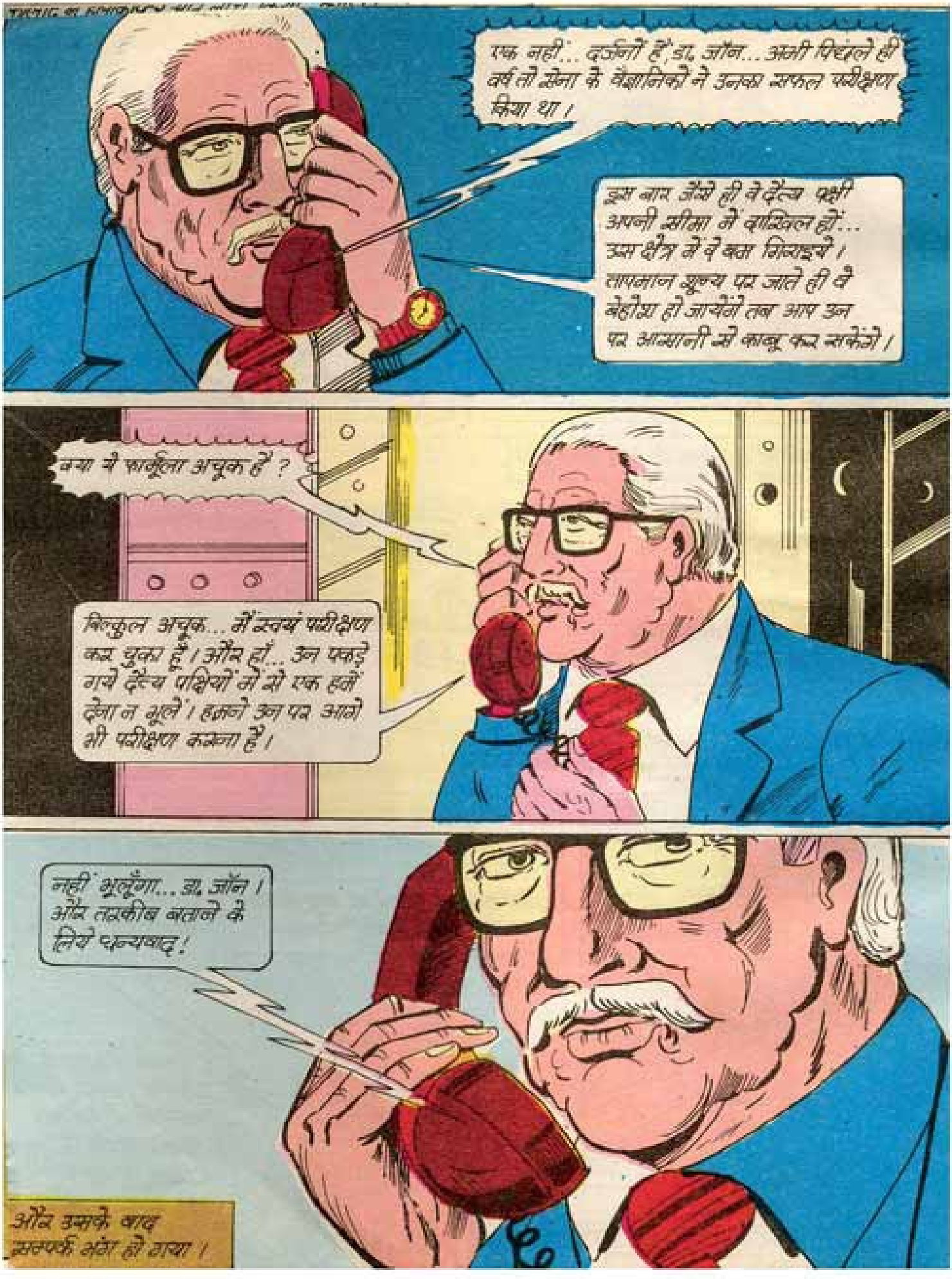
एक नहीं... दर्जनों हैं, डा. जॉन... अभी पिछले ही वर्ष तो सेना के वैज्ञानिकों ने उनका सफल परीक्षण किया था।
इस बार जैसे ही वे दैत्य पक्षी अपनी सीमा में दाखिल हों... उस क्षेत्र में वे बम गिराइयें। तापमान शून्य पर जाते ही वे बेहोश हो जायेंगे तब आप उन पर आसानी से काबू कर सकेंगे।
क्या ये फालूला अचूक हैं?
बिल्कुल अचूक... मैं स्वयं परीक्षण कर चुका हूँ। और हाँ... उन पकड़े गये दैत्य पक्षियों में से एक हमें देना न भूलें। हमको उन पर आगे भी परीक्षण करना है।
नहीं भूलूँगा... डा. जॉन। और तरकीब बताने के लिये धन्यवाद!
और उसके बाद सम्पर्क अंतरा हो गया।

बाकी का काम आसान सिद्ध हुआ... दूसरे दिन जैसे ही वे दैत्य पक्षी शोर मचाते हुए भारतीय सीमा में दाखिल हुए तभी-

कैंक कैंक... कैंक...

लो, वो आये वे दैत्य!

ओह ये टपकाये हमने बम...!

तेज रोशनी और बम विस्फोटों का भीषण स्वर वातावरण में गूंज उठा।

धड़ाम धड़ाम

वातावरण भयानक रूप से ठंडा हो उठा। ठंड से काँपते दैत्य पक्षी पके फल की भाँति नीचे टपकने लगे। सैनिक खुशी से चीख उठे।

वो मारा... दैत्य पक्षी बेहोश होकर नीचे गिर रहे हैं।

तुरन्त ही कई बलवानबंद गड़ियाँ, गिरते पक्षियों की ओर रवाना हो गईं। उनसे उतरे ढेर सारे सैनिक बेहोश हुए दैत्य पक्षियों को प्लास्टिक के मोटी-मोटी जालों में लपेटने लगे। कुछ ही घंटे बाद, दैत्य पक्षियों को कैद कर भारतीय-सीमा के जवान वापिस छावनी में लौट गये।

दूसरे दिन डा. जॉन के सम्मान में सैनाध्यक्ष ने छावनी में एक पार्टी का आयोजन किया।... जिसमें डा. जॉन की पूरी टीम को आमन्त्रित किया गया।

आपने तो कमाल कर दिया डा. जॉन... हमें तो यकीन नहीं था कि आपकी तरकीब इतनी अचूक सिद्ध होगी। सभी दैत्य पक्षी पकड़ लिये गये हैं... देश वासियों ने राहत की साँस ली है।

इसका श्रेय लि. सुशान्त को है श्रीमान... अगर ये मुझे उन दैत्य पक्षियों के बारे में पूरी जानकारी न देते तो ये दैत्य पक्षी न जाने कब तक विनाश करते रहते।

अब इन दैत्य पक्षियों का क्या करें? ये बेहोश अवश्य हुये हैं किन्तु मरे अब भी नहीं हैं।

इन्हें रूसी सरकार के हवाले कर दीजिये। ये उन्हीं के देश की पैदावार हैं!

लेकिन आजाद होकर क्या ये वहाँ तबाही न मचायेंगे...?

फौलाद ने शंका व्यक्त की।

कैसे मचायेंगे..? उनके यहाँ हजारों मील में फैला साइबेरिया का बर्फीला इलाका है। बर्फ में गहराई तक दफन कर देने के बाद, ये जीव स्वयं ही समाप्त हो जायेंगे

डा. जॉन... कृपया हमें बतायेंगे कि ये भयंकर जीव कैसे पैदा हुये? ये नीले बैलून क्या थे? अन्तिम बैलून फटने पर उसमें गिरे लाल रंग के बीज क्या थे... वगैरह.. वगैरह।

ये नीले रंग के बैलून इन पक्षियों के अंडे थे। अत्यधिक गर्मी में पैदा होने के कारण उनका वजन बेहद हल्का था। और उसमें बचे हुये लाल बीज, बीज न होकर जीवाणु थे जो बाद में आक्सीजन के स्पर्श से भयानक दैत्य पक्षी बन गये।...

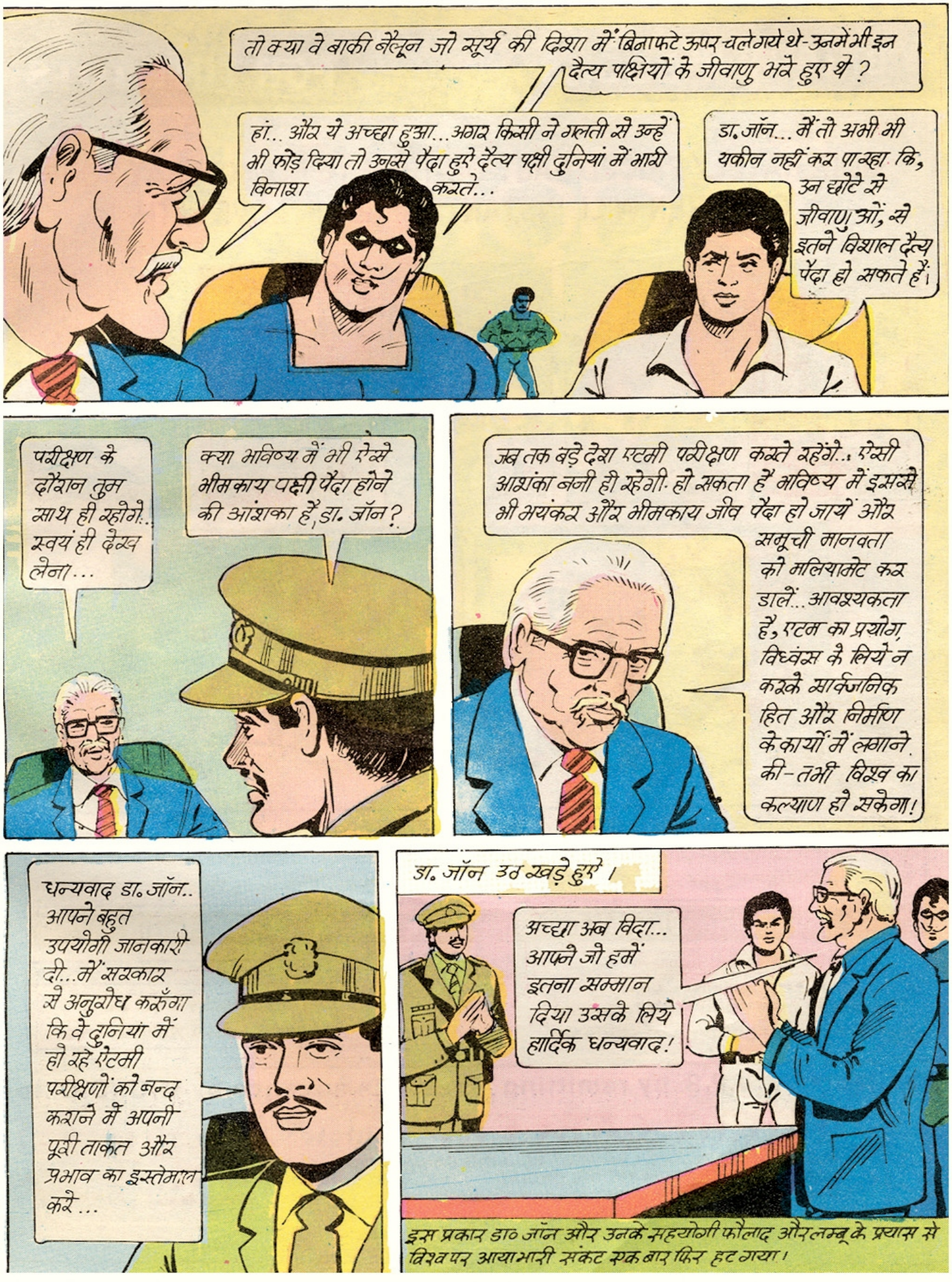
तो क्या वे बाकी बेलून जो सूर्य की दिशा में बिनाफटे ऊपर चले गये थे-उनमें भी इन दैत्य पक्षियों के जीवाणु भरे हुए थे ?
हां... और ये अच्छा हुआ... अगर किसी ने गलती से उन्हें भी फोड़ दिया तो उनसे पैदा हुये दैत्य पक्षी दुनियां में भारी विनाश करते...
डा. जॉन... मैं तो अभी भी यकीन नहीं कर पा रहा कि, उन छोटे से जीवाणुओं से इतने विशाल दैत्य पैदा हो सकते हैं।
परीक्षण के दौरान तुम साथ ही रहोगे.. स्वयं ही देख लेना...
क्या भविष्य में भी ऐसे भीमकाय पक्षी पैदा होने की आशंका है, डा. जॉन ?
जब तक बड़े देश एटमी परीक्षण करते रहेंगे.. ऐसी आशंका बनी ही रहेगी. हो सकता है भविष्य में इससे भी भयंकर और भीमकाय जीव पैदा हो जायें और समूची मानवता को मलियामेट कर डालें... आवश्यकता है, एटम का प्रयोग, विध्वंस के लिये न करके सार्वजनिक हित और निर्माण के कार्यों में लगाने की- तभी विश्व का कल्याण हो सकेगा!
धन्यवाद डा. जॉन.. आपने बहुत उपयोगी जानकारी दी... मैं सरकार से अनुरोध करूँगा कि वे दुनियां में हो रहे एटमी परीक्षणों को बन्द कराने में अपनी पूरी ताकत और प्रभाव का इस्तेमाल करे...
डा. जॉन उठ खड़े हुए।
अच्छा अब विदा... आपने जो हमें इतना सम्मान दिया उसके लिये हार्दिक धन्यवाद!
इस प्रकार डा० जॉन और उनके सहयोगी फौलाद और लम्बू के प्रयास से विश्व पर आया भारी संकट एक बार फिर हट गया।

बच्चों की पहली पसंद

डायमण्ड कॉमिक्स

Buy from the nearest bookstall, newspaper agent, railway station bookstall or contact us

DIAMOND COMICS (P) LTD,

A-22, Sector-63, Noida. Tel. : 0120-4238008/9, E-mail: diamondcomicsindia@gmail.com Website : www.diamondcomic.com

डायमण्ड कॉमिक्स प्रकाशन समूह के गौरवशाली प्रकाशन

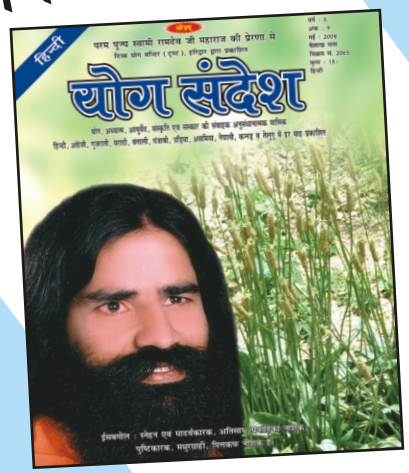

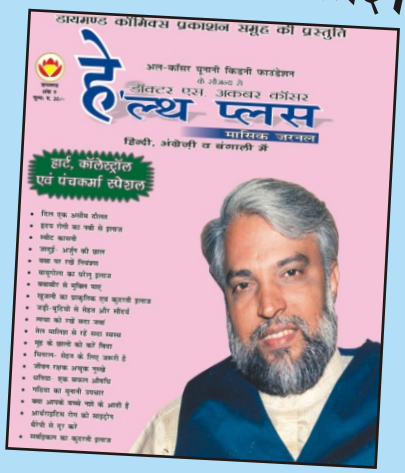

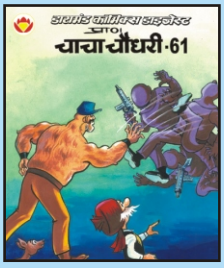

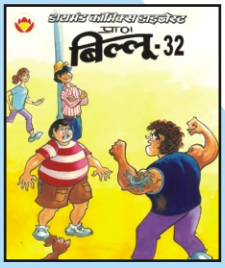

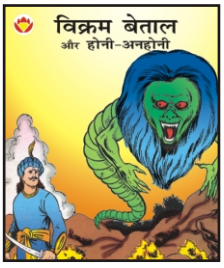

अपने निकट की बुक स्टाल से खरीदें या हमें लिखें

डायमण्ड कॉमिक्स प्रा. लि., 257, दरीबा कलां, दिल्ली-110006

फोन: (0120) 4238008-9, ई-मेल:diamondcomicsindia@gmail.com

डायमण्ड कॉमिक्स प्रस्तुति

कॉमिक वर्ल्ड

हिन्दी, अंग्रेजी व बंगाली में प्रकाशित मासिक पत्रिका

अंतर्राष्ट्रीय कॉमिक पात्र आर्ची, डेनिस द मेनिस, टार्जन, ही-मैन, टॉम एण्ड जैरी, हॉरर-स्टोरी, लव-स्टोरी और साथ में स्पोर्ट्स, म्यूजिक, हॉलिवुड, बॉलिवुड, कार एण्ड बाईक, पत्र-मित्रता, अनंत पई व स्वेट-मार्डेन के लेख, बाजार में नए उत्पादों पर स्थायी स्तम्भ और हमारे अपने चाचा चौधरी, बिल्लू व पिंकी के कॉमिक्स का पिटारा।

कॉमिक वर्ल्ड सदस्यता फार्म,

ए-22, इलेक्ट्रानिक सिटी, सेक्टर-63, नोएडा, उ.प्र.

फोन:(0120) 4238008/9, फैक्स: (0120) 4238010, इ-मेल : diamondcomicsindia@gmail.com

मैं कॉमिक वर्ल्ड का (हिन्दी/अंग्रेजी/बंगाली) का गौरवशाली सदस्य बनना चाहता/ चाहती हूं। साथ में डायमण्ड कॉमिक्स के नाम रु. 360/- का मनीआर्डर/डी.डी. नं ..... दिनांक.....भेज रहा/ रही हूं। कृपया मुझे अगामी वर्ष में कॉमिक वर्ल्ड के बारह अंक हर माह लगातार भेजें।

नाम..... उम्र.....

पता.....

.....पिन कोड.....फोन.....मोबाइल.....